आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 5 अंक : 1 सितम्बर, 2017 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा

कुलपति सम्बोधन

(71वें स्वाधीनता दिवस पर राजुवास में कुलपति प्रो. छीपा द्वारा उद्‌बोधन के अंश यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं)

प्रो. बी.आर. छीपा

प्रिय विद्यार्थियो, कर्मचारियों, फैकल्टी सदस्यगण उनके परिजनों, उपस्थित भाई और बहनों और प्रिय बच्चों! आज आजादी का ऐतिहासिक दिन हमें शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा सर्वस्व न्यौछावर करने की बदौलत हासिल हुआ है। देश ने गत वर्षों से आई चुनौतियों का एकजुटता से सामना किया है। देश की चहुंमुखी प्रगति में वैज्ञानिकों, किसानों और युवाओं ने अपना विशिष्ट योगदान दिया है। देश की 65 प्रतिशत आबादी में 25 वर्ष से कम युवा वर्ग शामिल है। आज देश पूरी दुनिया में एक महान शक्ति के रूप में उभर रहा है। कृषि, स्वास्थ्य, सुरक्षा, वैज्ञानिक और तकनीकी में उल्लेखनीय कार्य किया है। कृषि और पशुपालन में चुनौतियों से निपटने के लिए देश में हरित और श्वेत क्रांति का आगाज हुआ और देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बना। आज परिवर्तनशील समय में कृषि और पशुपालन हमारी अर्थ व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है अतः इस क्षेत्र में विकसित नई तकनीकों का जमीन पर क्रियान्वयन करना होगा। पशुधन विकास की गाथा में हमारा भी योगदान है। राज्य के युवा वेटरनरी विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है, इसके लिए सभी बधाई के पात्र हैं। इस विश्वविद्यालय के विकास रथ को हम सभी मिलजुल कर आगे बढ़ायेंगे। राजुवास तीन संघटक महाविद्यालयों में उच्च शिक्षा और शोध में अग्रणी है। पशुपालन के चार हजार डिप्लोमाधारी युवाओं को तैयार करने के साथ ही विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए भाषा प्रयोगशाला, इन्टरनेट सुविधा और खेलकूद व पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन दिया गया है। देशी गौवंश और भैंसों के अनुसंधान केन्द्र स्थापित कर उच्च गुणवत्ता का जर्म प्लाज्म पशुपालकों को सुलभ करवाया जा रहा है। राज्य के जिलों में पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र पर भी शोध और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाकर, किसान और पशुपालकों के लिए उपयोगी हिन्दी भाषा में प्रकाशन किए जा रहे हैं। विश्वस्तरीय पशुचिकित्सा अस्पताल सेवाएं सुलभ करवाई गई हैं जिनमें पशुओं की सीटी स्केन भी शामिल है। कृषक व पशुपालकों को परामर्श के लिए टोल–फ्री हैल्प लाइन, वाइस मैसेज सर्विस शुरू की गई है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा राजुवास को इस वर्ष एग्री–यूनिफिस्ट की मेजबानी सौंपी गई। इसके भव्य आयोजन में देश के 54 विश्वविद्यालयों के छात्र/छात्राओं ने शिरकत की। विद्यार्थियों के चहुंमुखी विकास के लिए हम निरन्तर प्रयत्नशील रहेंगे। आप सबको स्वाधीनता दिवस की बहुत–बहुत बधाई। वंदे मातरम्। जय हिन्द।

प्रो. अवधेश प्रताप सिंह बने प्रसार शिक्षा निदेशक

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा के निर्देशानुसार विश्वविद्यालय के मेडिसिन विभाग के प्रो. अवधेश प्रताप सिंह को नए प्रसार शिक्षा निदेशक के पद पर नियुक्त किया गया। प्रो अवधेश प्रताप सिंह ने 29 अगस्त को प्रसार शिक्षा निदेशक का पद भार संभाल लिया। वे पशुपालन नए आयाम मासिक पत्रिका के संपादक भी होंगे।

स्वाधीनता दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. एम.एल. छीपा एवं राजुवास के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण

मुख्य समाचार

स्वाधीनता दिवस पर कुलपति प्रो. छीपा द्वारा ध्वजारोहण कर सलामी : 51 जनों को उत्कृष्ट कार्यों के लिए किया सम्मानित

71वें स्वाधीनता दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने राजुवास में ध्वजारोहण कर सलामी दी। अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल के पूर्व कुलपति प्रो. एम.एल. छीपा समारोह के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर शैक्षणिक अनुसंधान प्रशासनिक क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा और कार्यों के लिए कुलपति प्रो. छीपा ने 51 जनों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर राजुवास के छात्र–छात्राओं, फैकल्टी सदस्यों ने देशभक्ति पूर्ण गीत और नृत्यों की मनभावन प्रस्तुति दी। शिक्षकों, छात्रों और अधिकारियों सहित एन.एस.एस. और एन.सी.सी. कैडेट्स ने वृक्षारोपण किया। कुलपति प्रो. छीपा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि गत 70 वर्षों में देश की विकास गंगा में किसानों, वैज्ञानिकों और युवाओं का महत्ती योगदान रहा है। कृषि, स्वास्थ्य, सुरक्षा और वैज्ञानिक तकनीकी में उल्लेखनीय कार्यों की बदौलत राष्ट्र एक महान शक्ति के रूप में उभर रहा है। समारोह के मुख्य अतिथि अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल के पूर्व कुलपति प्रो. एम.एल. छीपा ने कहा कि इस वेटरनरी विश्वविद्यालय ने अल्प समय में आशातीत प्रगति कर नए आयाम स्थापित किए हैं। विश्वविद्यालय के ध्येय वाक्य में पशुधन को आजीविका का प्रमुख जरिया माना गया है। युवाओं को कौशल आधारित विकास द्वारा नौकरी के बजाय स्वरोजगार उपलब्ध करवाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिन्दी विश्वविद्यालय द्वारा अभियांत्रिकी और पैरा मेडिकल शिक्षा के पाठ्यक्रम हिन्दी भाषा में प्रारंभ करवाए गए हैं। चिकित्सा और वेटरनरी शिक्षा में भी इसको लागू किया जाना चाहिए। भाषा संवाद ही नहीं संस्कृति को भी प्रभावित करती है। कई विकसित देशों में ये पाठ्यक्रम उनकी अपनी भाषा में ही पढ़ाये जा रहे हैं। हमें भी अपनी मातृभाषा में ही ऐसे साहित्य का सृजन करना चाहिए।

राजुवास में कृषक–वैज्ञानिक संवाद का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय में जिले के कृषक–पशुपालक वैज्ञानिक संवाद का दो दिवसीय कार्यक्रम 3–4 अगस्त को पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र में संपन्न हो गया। आत्मा परियोजना की केफेटेरिया गतिविधि बी–11 (ए) के तहत आयोजित संवाद में जिले के 30 कृषक–पशुपालक और राजुवास के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने संवाद कार्यक्रम का

उद्‌घाटन करते हुए कहा कि किसान और पशुपालकों की समस्याओं को चिन्हित कर उनके निराकरण के लिए अनुसंधान किया जाना महत्वपूर्ण है। उन्होंने संवाद को अत्यंत उपयोगी बताते हुए कहा कि इसका उद्देश्य क्षेत्रीय समस्याओं को चिन्हित करके किसान और पशुपालकों की समस्याओं के समाधान की नई अनुसंधान परियोजनाएं स्वीकृत की जा सकेगी। कुलपति प्रो. छीपा ने कहा कि कृषक स्वंय कृषि वैज्ञानिक हैं अतः उनके लिए लेण्ड–टू–लैब जैसे कार्यक्रम अधिक सार्थक सिद्व हुए हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों का आह्‌वान किया कि वे वैज्ञानिक खेती–बाड़ी और पशुपालन के वैज्ञानिक तौर तरीकों की जानकारी सहज और सरल भाषा में बताएं। मृदा रसायन वैज्ञानिक कुलपति प्रो. छीपा ने संवाद में शिरकत करते हुए संभागियों को मृदा के नमूने एकत्रित कर जांच कार्य के विभिन्न पहलुओं के बारे में उपयोगी जानकारी दी। इस अवसर पर कुलपति प्रो. छीपा ने राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशालय के मासिक प्रकाशन "पशुपालन नए आयाम" के ताजा अंक का विमोचन किया। आयोजन सचिव प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि पशु आहार प्रबंधन, संरक्षण और पशुपोषण, पशुरोग निदान व उपचार जैसे विषयों पर राज्य में गत वर्ष 827 प्रशिक्षणों में 25 हजार कृषक और पशुपालकों को लाभान्वित किया गया है। समारोह में उप निदेशक (कृषि) एवं पदेन परियोजना निदेशक 'आत्मा' श्री बी.आर. कड़वा ने बताया कि संवाद कार्यक्रम का उद्देश्य किसान और पशुपालकों की क्षेत्रीय समस्याओं के समाधान के लिए सरकार द्वारा अनुसंधान परियोजनाओं को स्वीकृति दी जाएगी। आत्मा परियोजना में कृषक और पशुपालकों के लिए वित्तीय प्रावधानों की कमी नहीं है। उद्‌घाटन सत्र में प्रगतिशील कृषक परमेश्वरलाल (श्रीडूंगरगढ़) और पशुपालक नवीन सिंह तंवर (बीकानेर) ने अपने विशिष्ट कार्यों और अनुभवों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में निदेशक क्लिनिक्स प्रो. जे.एस. मेहता, पशु पोषण विभाग के प्रो. राधेश्याम आर्य, अनुसंधान सह निदेशक प्रो. ए.ए. गौरी, कुलपति के प्रशासनिक सचिव प्रो. बी.एन. श्रृंगी सहित अन्य राजुवास वैज्ञानिक उपस्थित थे। कृषि अधिकारी श्री अमर सिंह ने सभी का आभार जताया।

उष्ट्र स्वास्थ्य–उत्पादन पर शिक्षण एवं शोध के लिये हुआ करार

वेटरनरी विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर के मध्य उष्ट्र स्वास्थ्य, उत्पादन पर शिक्षण और शोध कार्यों के लिए पूर्व में किए गए तीन साल के आपसी करार (एम.ओ.यू.) की अवधि को बढ़ाने के सहमति पत्र पर 5 अगस्त को हस्ताक्षर किये गए। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा और राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. एन.वी. पाटिल ने आपसी करार पर हस्ताक्षर कर दस्तावेज एक दूसरे के सुपुर्द किए। इस अवसर पर कुलपति प्रो. छीपा ने कहा कि दोनों संस्थाओं के बीच एम.ओ.यू. से अश्व चिकित्सा उत्पादन एवं प्रबंधन के साथ–साथ अनुसंधान

कार्यों को गति मिलेगी। इससे संकाय सदस्य, वैज्ञानिक और छात्रों सहित उष्ट्र पालकों को लाभ मिलेगा। किसानोपयोगी शिक्षा और अनुसंधान हमारा प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र के निदेशक प्रो. एन.वी. पाटिल ने कहा कि राजुवास के साथ मिलकर कार्य करना हमारे लिए गौरव की बात है। गत तीन वर्षों से चले आ रहे करार से पशु उत्पादन और अनुसंधान कार्यों के साथ ही पशुधन संपदा के कल्याणकारी कार्यों को नए आयाम मिले हैं। इससे समग्र समाज लाभान्वित हो रहा है। करार की अवधि बढ़ाने के फैसलों के सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने बताया कि गत 3 वर्षों के करार के तहत उल्लेखनीय कार्य और उपलब्धियां हासिल हुई हैं।

आत्मा परियोजना में पशुपालकों ने सीखी "पशुपोषण एवं हरा चारा प्रबंधन" की तकनीकें

वेटरनरी विश्वविद्यालय और उपनिदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक "आत्मा" के संयुक्त तत्वावधान में लूणकरनसर के 30 पशुपालकों का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 11 व 12 अगस्त को संपन्न हो गया। राजुवास के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र में वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों ने 'पशु पोषण एवं हरा चारा प्रबंधन' विषय पर पशुपालकों को सघन प्रशिक्षण दिया गया। राजुवास के वित्त नियंत्रक श्री अरविन्द बिश्नोई ने पशुपालकों को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरित करते हुए कहा कि वैज्ञानिक प्रशिक्षण में उन्नत पशु पोषण के उपायों को लागू करके पशुधन से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। पशुपालकों को राजुवास से तकनीकी परामर्श सेवाओं का भी पूरा उपयोग करना चाहिए। प्रशिक्षण समन्वयक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा कृषक और पशुपालकों के लिए इस वर्ष कई प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। ये प्रशिक्षण राजुवास के वी.यू.टी.आर.सी. केन्द्रों के साथ–साथ गांवों में भी आयोजित किये जाते है। उन्होंने पशुपालकों का आह्वान किया कि वे वेटरनरी विश्वविद्यालय के उपयोगी प्रकाशनों को वेबसाइट पर देखकर तथा टोल फ्री हैल्पलाइन और वाईस मैसेज सर्विस का लाभ उठाकर भी उन्नत पशुपालन के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। प्रशिक्षण के अंत में पशुपालन प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में विजेता रहे पशुपालक सुभाष बिश्नोई, कैलाश और हनुमान सिंह को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय में संभाग के गौशाला प्रबंधकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

राज्य के गोपालन विभाग के सौजन्य से राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा संभाग के गौशाला प्रबंधकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 16–17–18 अगस्त को वेटरनरी विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया। इसमें 45 गौशाला प्रबंधक–व्यवस्थापक शामिल हुए। अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल के पूर्व कुलपति प्रो. एम.एल. छीपा ने उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि रूप में संबोधित करते हुए कहा कि गौपालन हमारा पारंपरिक और उपयोगी व्यवसाय रहा है। वर्तमान में गाय के प्रति बहुत आस्था होने के बावजूद गौपालन से विमुख होना चिंतनीय है। आज घर–घर में गोपालन की संभावनाओं को मूर्त रूप देने की जरूरत है। पारंपरिक पशुपालन के साथ ही वैज्ञानिक तौर–तरीके से पालन करके गौ पालन को अधिक उत्पादक और लाभकारी बनाया जा सकता है। गौशाला प्रबंधकों को गोसेवा का पुनीत अवसर मिला है। जिसका उपयोग गो सेवा प्रचार के लिए भी किया जाना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने कहा कि बढ़ते शहरीकरण के कारण गोपालन की प्रवृत्ति में कमी हो रही है जबकि यह शुद्ध घी–दूध का प्रमुख स्त्रोत है। गौपालन रोजगार के रूप में एक उपयोगी व्यवसाय है अतः जागरूकता और वैज्ञानिक प्रशिक्षण से गोपालन को बढ़ावा मिलेगा। प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि गोपालन विभाग के सहयोग से गौशाला को स्वावलम्बी बनाने के तहत यह विशेष प्रशिक्षण गौशाला प्रबंधकों के लिए आयोजित किया गया है। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा, पशुपालन विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. रणजीत सिंह ने भी संभागियों को सम्बोधित किया। इस अवसर पर अतिथियों ने प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा तैयार प्रशिक्षण संदर्शिका का विमोचन किया। इस अवसर पर गोपालन विभाग के संयुक्त निदेशक प्रो. जे.पी. अटल, उपनिदेशक पशुपालन विभाग डॉ. ओ.पी. किलानियां, कुलपति के प्रशासनिक सचिव प्रो. बी.एल. श्रृंगी, डॉ. डी.एस. मीणा भी मौजूद थे।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

वी.यू.टी.आर.सी., चूरू द्वारा 5, 9, 22, 24, 26, एवं 30 अगस्त को डाडर, कांगड़, ढीगारला, सांगासर, सात्यु एवं सारसर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 29 अगस्त को गांव देपालसर में विचार गोष्ठी के आयोजन शिविरों में 241 पशुपालकों व कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 8, 14, 17 एवं 19 अगस्त को जोडीवाला, सुखचेनपुरा, अमरपुरा जाटान एवं 8 एसएचचीडी गांवो में तथा 31 जुलाई से 9 अगस्त दस दिवसीय एवं 28–29 अगस्त को दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 161 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., सिरोही द्वारा 10, 16, 18, 21 एवं 23 अगस्त को कृष्णगंज, सांतपुर, जीरावल, उडवारिया एवं मावल गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 158 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., बाकलिया–लाडनूं द्वारा 2, 3, 4, 11, 16, 17, 18 एवं 21 अगस्त को लाडाबास, रामसाबास, खातिया बासनी, डसाणा कलां, आकोदा, ढ़िगाल एवं दुजार गांवों में तथा 22 अगस्त को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 201 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा 327 पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., अजमेर द्वारा 3, 9, 10, 18, 19, 21, 22, 23, 24, 26 एवं 28 अगस्त को नारेली, कोटडी, भगवतंपुरा, तिलोनिया, लालावास, कटसूरा, शेरगढ़, नसीराबाद, अजमेर, सरवाड एवं पुष्कर गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 327 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा 389 पशुपालक लाभान्वित

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर द्वारा 9, 11, 14, 16, 17, 19, 21 एवं 22 अगस्त को भेवड़ी, गलियाणा, खेडा, जरियाणा, नरनिया, वसुंदर छोटी, साबला एवं चूंदवड़ा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 389 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 4, 5, 8, 11, 19, 23 एवं 24 अगस्त को गांव भगवानपुरा, दविली,

नगला मैथना, ऐंचवाड़ा, खुडासा, अधापुर एवं नैतवाडी गांवो में तथा 16 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 149 महिला पशुपालकों सहित कुल 193 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में 274 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 5, 8, 9, 17, 18, 19, 21 एवं 22 अगस्त को गांव श्योरण, नूरपुरा खेड़ा, निमोला, अरनियानील, दाकिया, करीमपुरा, सांडीला एवं देवली भांची गांवो में तथा दिनांक 24 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 274 पशुपालकों एंव कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 5, 17, 19, 21, 22 एवं 24 अगस्त को गांव कालवास, धीरेरा, दुलमेरा, बाढ़ेरा, हरियासर एवं गारबदेसर गांवो में एक दिवसीय तथा दिनांक 10–11 अगस्त को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 243 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 9, 10, 14, 17, 18, 22 एवं 23 अगस्त को गांव रंगपुर, झालरी, दरबीजी, चोमावीभू, जालीमपुरा, भूदेन, आमली एवं दिगोद गांवों में तथा 19 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 262 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा 311 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 4, 5, 8, 9, 10, 11, 17, 18 एवं 19 अगस्त को गांव काटुन्दा, देवरी, पारसोली, रामाखेडा, सिन्दवरी, रसूलपुरा, ऐराल, नेथावलगढ एवं कन्थारिया तथा 22 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 311 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा 437 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 3, 4, 10, 11, 14, 19, 21, 23 एवं 28 अगस्त को बाल गोविन्दपुरा, पूठपुरा, नरे का पुरा, चौराखेड़ा, मिश्रियापुरा, महरोली, रहसैना, राजा का नगला एवं बोथपुरा गांवों में तथा 26 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 437 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा 3, 5, 8, 9, 16, 25, 26, 27 एवं 30 अगस्त को गांव थालड़का, रामपुरा मटोरिया, बुघवालिया, नेहरावाली ढाणी, 15–16 केडब्ल्यूडी, नथवानिया, धानसिया, जोरावरपुरा एवं मोठसरा गांवो में एक दिवसीय कृषक – पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 350 कृषक–पशुपालकों ने भाग लिया।

बदलते मौसम में पशुओं की देखभाल कैसे करें

अगस्त माह समाप्त होने और सितम्बर माह के प्रारंभ में मौसम में बदलाव शुरु हो जाता है। वर्षा लगभग समाप्त होने लगती है और रात के समय थोड़ी ठंडक का आभास होने लगता है। साथ ही दिन तथा रात के तापमान में काफी अन्तर रहने लगता है। कई बार रात के समय तापमान में अचानक गिरावट आती है जिसकी वजह से छोटे–बड़े सभी प्रकार के पशुओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस मौसम में पशुओं के शरीर पर उपस्थित बाह्य परजीवी जैसे कि जूं, चींचड़ इत्यादि बहुत सक्रिय हो जाते हैं। ये बाह्य परजीवी कई रक्तपरजीवी रोग जैसे बैबेसिओसिस, थैलेरिओसिस, ट्रिपैनोसोमिएसिस, ऐनाप्लास्मोसिस आदि के लिए रोगवाहक की भूमिका भी निभाते हैं। इस बदलते मौसम में विषाणुजनित रोग भी पशुओं को काफी प्रभावित करते हैं। जिन पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है वो पशु विभिन्न संक्रमणों से भी प्रभावित हो सकते हैं।

पशुपालकों को बदलते मौसम में अपने पशुओं का विशेष ध्यान रखना चाहिये। वर्षा का समय लगभग खत्म हो रहा है तथा रात में मौसम ठंडा होने से छोटे पशुओं में न्यूमोनिया जैसे रोगों से बचाव के लिये उन्हें छप्पर अथवा पेड़ के नीचे बांधें। पशुओं के बाड़े को सूखा रखें एवं बाड़े की साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखें। गन्दगी और जल भराव से विभिन्न प्रकार के मच्छर–कीट पैदा होते हैं जो अनेकों विषाणुजनित व रक्त परजीवजनित बीमारियां फैलाते हैं। बाह्य परजीवियों के नियंत्रण के लिये पशुपालक को चाहिये कि वो अपने पशुओं को बाहरी संक्रमित पशुओं के संपर्क से दूर रखें तथा नियमित रूप से बाह्य कृमिनाशक दवा पशु के शरीर पर जरूर लगाएं। चूंकि ये दवाईयां जहरीली होती हैं अतः पशुपालक बाह्य कृमिनाशक दवा पशुओं के शरीर पर लगाते समय उसकी सान्द्रता एवं पानी में घोल की मात्रा का अवश्य ध्यान रखें तथा दवाई लगी रहने तक पशु को चाटने नहीं दें। बाह्य कृमिनाशक दवा शरीर पर लगाते समय इसे पशु के आंख, नाक एवं मुंह से दूर रखें। पशुपालक भी दवा के सीधे संपर्क में नहीं आएं। कुछ दवाईयां इंजेक्शन के रूप में भी आती है जिनका प्रयोग पशुचिकित्सक की देख–रेख में किया जा सकता है। पशुपालक यह भी ध्यान रखें कि सभी पशुओं को बाह्य कृमिनाशक दवाई एक साथ ही लगाई जाये तथा साथ–साथ पूरे बड़े में भी दवा का छिड़काव करें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

मुर्गीपालन : पोल्ट्री के असामान्य व्यवहार पहचान कर बढ़ाएं मुनाफा

पोल्ट्री का व्यवहार अप्रत्यक्ष रूप से उसके स्वास्थ्य एवं सामान्य शरीर कार्यिकी को इंगित करता है। अतः यह जरूरी है कि मुर्गीपालक अपने पोल्ट्री के व्यवहार को समझे एवं पहचानें, ताकि व्यवहार में कुछ बदलाव आने पर तत्काल उचित कार्यवाही कर समस्या का निवारण कर सके और अपनी पोल्ट्री को बचा कर आर्थिक नुकसान रोक सके। इन समस्याओं का तत्काल निवारण आवश्यक है क्योंकि एक पोल्ट्री के असामान्य व्यवहार से झुण्ड के अन्य सदस्य प्रेरित होकर असामान्य व्यवहार कर सकते हैं एवं समस्या थोड़े समय में ही विकराल रूप धारण कर सकती है।

असामान्य व्यवहार–कारण और निराकरण :

कैनिबेलिज्म – इसमें झुण्ड की मुर्गी दूसरी मुर्गियों पर आक्रमण करके उन्हें घायल कर देती है एवं उनका मांस खाने लगती है। घाव गहरे होने पर उनसे रक्तस्राव होने लगता है एवं संक्रमण की संभावना भी बनी रहती है। कैनिबेलिज्म के कारण झुण्ड में मृत्युदर बढ़ जाती है। अण्ड़े देने वाली मुर्गियों में अण्डा निकलने के स्थान के आसपास घाव पाये जाते हैं।

कारण :

- बड़े झुण्ड़ को अपेक्षाकृत छोटे स्थान पर रखने से।
- आनुवांशिक कारण।
- खाने में प्रोटीन एवं लवण की कमी से।
- शरीर से पंखों के झड़ जाने से, या घाव से उत्पन्न रक्तस्राव से या फिर अत्यधिक बाह्य परजीवी का प्रकोप।
- वे मुर्गियां जो अण्ड़ा देने की प्रारम्भिक अवस्था में होती है, उनमें अण्डा देने के स्थान के आस–पास रक्तस्राव हो सकता है। यह रक्त अन्य मुर्गियों को आकर्षित करता है। एक बार रक्त एवं मांस को खाने के बाद यह स्वाद असामान्य व्यवहार का कारण बन जाता है।

रोकथाम :

- चोंच काटना (डीबीकिंग) यह बहुत ही सस्ता एवं कारगर उपाय है। चोंच काटने की प्रक्रिया एक दिन के चूजे से लेकर किसी भी उम्र की पोल्ट्री में कर सकते हैं। यह प्रक्रिया हाथ द्वारा या फिर मशीन द्वारा की जा सकती है। इसमें ऊपरी चोंच का एक तिहाई एवं निचली चोंच का शीर्ष भाग काटा जाता है। यह किसी कुशल व्यक्ति या विशेषज्ञ द्वारा करवाया जाना चाहिए।
- असामान्य व्यवहार की मुर्गी को झुण्ड़ से अलग रखना।
- प्रभावित मुर्गी को भी अलग रखना एवं उसके घावों का समुचित उपचार करना।
- दाने की हर समय पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता।
- मुर्गी के अण्डा देने का स्थान पूर्ण रूप से शांत एवं पृथक होना चाहिए।

अण्डा खाना – कई बार मुर्गी स्वयं का अण्डा खाने लगती है, ऐसा अण्ड़े के कवच का कमजोर होने के कारण या फिर अण्डा देने के स्थान पर घास–फूस की कमी से होता है, जिससे अण्डा आसानी से टूट जाता है। अण्ड़े का स्वाद एक बार आ जाने से पोल्ट्री स्वयं ही अपना अण्डा तोड़कर खाने लगती है। मुर्गी द्वारा अण्डा देने के बाद उसे जल्दी से उठा लेना चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया गया तो भी मुर्गी में यह व्यवहार देखा जाता है। सचेत मुर्गीपालक ही इस व्यवहार को पहचान सकता है।

रोकथाम :

- असामान्य व्यवहार की मुर्गी को पृथक रखना।
- कैल्सियम एवं प्रोटीनयुक्त आहार पोल्ट्री को खिलाना।
- इस व्यवहार से ग्रस्त मुर्गी को विशेष रूप से बनाये गये पैन में रखा जाता है, जिससे कि अण्डा बाहर निकलते ही फिसल कर मुर्गी की पहुंच से दूर हो जाता है।
- डीबीकिंग या चोंच काटना भी लाभदायक रहता है।

अण्डे छुपाना– यह व्यवहार पालतू मुर्गियों में कम पाया जाता है। मुर्गी अण्डों को झाड़ियों में, खेत में या अन्य किसी स्थान पर छुपा देती है।

रोकथाम :

- मुर्गी को खुला न छोड़ें।
- अण्ड़े देने के स्थान को घासफूस या लकड़ी के बुरादे से नर्म एवं आरामदायक बनाना चाहिए।

पाइका – इस अवस्था में मुर्गी ऐसी चीजें खाने लग जाती है जो कि वो सामान्यतः नहीं खाती है जैसे पंख, चमड़ा इत्यादि।

कारण : फास्फोरस, प्रोटीन की कमी एवं परजीवी संक्रमण

रोकथाम : सही प्रबन्धन एवं संतुलित आहार द्वारा इससे बचा जा सकता है।

पंख उखाड़ना – यह व्यवहार सम्बन्धित समस्या अण्ड़े उत्पादन करने वाली मुर्गियों में पाई जाती है। इससे एक मुर्गी बार–बार दूसरी मुर्गी के पंखों पर चोंच से वार कर उन्हें उखाड़ देती है। मुर्गी की पूंछ एवं पंखों के आस–पास का हिस्सा ज्यादा प्रभावित होता है।

कारण : संतुलित आहार एवं लवण की कमी।

रोकथाम एवं नियन्त्रण :

चोंच को घिसना (ट्रिमिंग) : इसे सावधानी पूर्वक करना चाहिए। बहुत ज्यादा घिस देने से चोंच द्वारा शरीर पर बैठे बाह्य परजीवी को नहीं हटाया जा सकता है।

- पोल्ट्री को कम रोशनी में रखना – यह उपाय ज्यादा कारगर नहीं है अण्ड़ों के उत्पादन के लिए कम से कम 5 लक्स तीव्रता की रोशनी जरूरी है। सामान्यतः पोल्ट्री फार्म में 10 लक्स की तीव्रता की रोशनी रखी जाती है। रोशनी कम रखने से निरीक्षण में परेशानी एवं पोल्ट्री में आलस्य एवं डर की भी संभावना रहती है।
- हर समय संतुलित आहार एवं लवण की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता।

उपरोक्त वर्णित छोटी–छोटी बातों का यदि ध्यान रखा जाये तो पोल्ट्री फार्म में होने वाले बड़े आर्थिक नुकसान से बचा जा सकता है। समय रहते इस समस्या का उचित उपाय करें एवं आर्थिक स्वावलम्बन की ओर बढ़ें।

डॉ. सुनीता पारीक (9461245845),
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

अपने विश्वविद्यालय को जानें

वन्यजीव प्रबन्धन एवं स्वास्थ्य अध्ययन केन्द्र

वन्यजीवों का हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्व है। वन्यजीव वनस्पति, खाद्य–श्रृंखला एवं वातावरण संतुलन बनाये रखने के लिए महत्वपूर्ण है। पालतू पशुओं का मानव द्वारा रख–रखाव एवं प्रबन्धन अनादिकाल से चला आ रहा है लेकिन वन्य जीवों के स्वास्थ्य एवं प्रबन्धन के बारे में हमारे समाज द्वारा कम ही सोचा गया, जिसकी वजह से आखेट, शिकार इत्यादि के माध्यम से कुछ वन्यजीव तो विलुप्त हो गए और कुछ वन्यजीव प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2012 में वन्यजीव प्रबन्धन में वन्यजीवों के स्वास्थ्य एवं प्रबन्धन पर लगातार काम हो रहा है। केन्द्र के माध्यम से चिड़ियाघरों में रखे जा रहे वन्यजीवों के आंतरिक परजीवियों के बारे में सर्वेक्षण किया जा रहा है। साथ ही ई. कौलाई नामक जीवाणु पर अनुसंधान किया गया है। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों को वन्यजीव संरक्षण एवं संवर्द्धन के बारे में तथा वनपाल और वनरक्षकों को वन्यजीव प्रबन्धन पर लगातार प्रशिक्षण दिया जा रहा है। वन्यजीव क्षेत्र के आस–पास रहने वाले पशुपालकों को ऐसी बीमारियों के बारे में शिक्षित किया जाता है जिनकी संभावना वन्यजीवों में फैलने से होती है। इसके साथ ही निकटवर्ती किसानों एवं पशुपालकों में इनके फैलने की संभावना होती है। ऐसे किसानों एवं पशुपालकों को वन्यजीवों के संरक्षण के बारे में शिक्षित किया जाता है। विभिन्न बायोलोजिकल पार्कों में कार्यरत पशुचिकित्सकों एवं वन अधिकारियों को आवश्यकतानुसार जानकारी दी जा रही है। यह केन्द्र बीकानेर स्थित जोड़बीड़ वन्यजीव क्षेत्र में आने वाले पक्षियों के बारे में भी जानकारी जुटा रहा है व ऐसे कारकों का अध्ययन कर रहा है जिसकी वजह से पक्षियों के आवागमन पर प्रभाव पड़ता है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–सितम्बर, 2017

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	बांसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनूं, धौलपुर, सवाई–माधोपुर, अलवर, बून्दी, हनुमानगढ़, चूरू, कोटा, अजमेर, सीकर, बीकानेर
तीन दिन का बुखार	गौवंश, भैंस	जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जयपुर, चित्तौड़गढ़, अलवर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, बीकानेर, पाली, सिरोही
चेचक (माता रोग)	बकरी, भेड़, ऊँट	जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, हनुमानगढ़, चित्तौड़गढ़, जैसलमेर, बाड़मेर
गलघोंटू	भैंस, गौवंश	हनुमानगढ़, धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, दौसा, टौंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, चित्तौड़गढ़, श्रीगंगानगर, अलवर, झुंझुनूं, अजमेर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	सीकर, सिरोही, पाली, जालोर, हनुमानगढ़, जयपुर, कोटा, बीकानेर, श्रीगंगानगर, डूंगरपुर, उदयपुर
ठप्पा रोग	गौवंश, भैंस	हनुमानगढ़, जयपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, पाली, राजसमन्द, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा
फड़किया रोग	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, कोटा, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, भीलवाड़ा, बारां, बूंदी, हनुमानगढ़
थाइलेरिओसिस एवं बबेसियोसिस	भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, चूरू, सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, जयपुर, जोधपुर, सीकर, डूंगरपुर
सर्रा (तिबरसा)	ऊँट, भैंस	बांसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, सीकर, श्रीगंगानगर, जयपुर, डूंगरपुर
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि एवं पर्ण–कृमि)	भैंस, गौवंश, भेड़, बकरी, ऊँट	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, सवाई–माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, सीकर, श्रीगंगानगर, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अपने स्वदेशी ऊँट वंश को पहचानें

जैसलमेरी ऊँट : गौरव प्रदेश का

ऊंट को राजस्थान का जहाज कहा जाता है। 19वीं पशुगणना के अनुसार भारत में केवल 4 लाख ऊंट हैं, जिसमें से 81.37 प्रतिशत राजस्थान में पाये जाते हैं। ऊंटों की 9 नस्लें हैं जो भारत में पायी जाती हैं जिसमें से जैसलमेरी नस्ल मुख्य है। जैसलमेरी नस्ल के ऊंट मुख्यतया सवारी एवं दौड़ के लिए मशहूर हैं। नई पशुगणना के अनुसार जैसलमेरी नस्ल के 1,09,476 ऊंट भारत में है। जैसलमेरी ऊंट जैसलमेर, बाड़मेर व जोधपुर में पाये जाते हैं। इस नस्ल का उद्‌गम सिंध (पाकिस्तान) से हुआ है। इसका शरीर हल्का व मध्यम आकार का होता है। इसका रंग हल्का भूरा होता है। इसकी आंखों पर बाल बहुत कम होते हैं। शरीर पर छोटे बाल होते हैं। इसकी खोपड़ी छोटी होती है, कान छोटे, गर्दन लम्बी, टांगे पतली व शक्तिशाली होती है। एक वयस्क नर ऊंट का वजन 574.80 + 12 किग्रा होता है एवं एक वयस्क मादा ऊंट का वजन 537 + 12 किग्रा. होता है। जैसलमेरी नस्ल का दुग्ध उत्पादन एक दिन में 3–8 किग्रा. होता है। जैसलमेरी ऊंट के नस्ल की विशेषता होती है कि अपने हल्के शरीर के कारण इनकी गति बहुत ज्यादा होती है। एक ऊंट एक दिन में 100 से 125 कि.मी. दौड़ सकता है। रेंसिग के अलावा यह नस्ल भार ढ़ोने के काम भी आती है। इसके साथ–साथ इसका लोक संस्कृति व सामाजिक महत्व भी है।

सफलता की कहानी

भेड़ पालन से पाई आर्थिक सफलता

राजस्थान में वर्षा आधारित कृषि की अनिश्चितता के बीच पशुपालन एक आजीविका का ठोस विकल्प रहा है। नागौर में भेड़ व बकरी पालन बहुत से भूमिहीन किसानों का आर्थिक सम्बल बना हुआ है। इसी को अपनाकर, आर्थिक उन्नति का उदाहरण प्रस्तुत किया है पेमाराम ने, जो नागौर जिले के डीडवाना तहसील के गांव दौलतपुरा के निवासी हैं। इनके पास पैतृक 20 बीघा जमीन थी किन्तु आय पर्याप्त नहीं होने के कारण भेड़ पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाया। 15 भेड़ों से व्यवसाय प्रारम्भ करने वाले पेमाराम के पास वर्तमान में 100 मादा भेड़ें, 3 नर भेड़, 20 बकरियां और एक बकरा है। प्रतिवर्ष 15–20 भेड़ें विक्रय करके और प्रति भेड़ 4000 से 5000 रू.की आय प्राप्त करते हैं, इसके अतिरिक्त ऊन विक्रय से भी आय अर्जित करके प्रति वर्ष लगभग 10,00,00 रू. आय प्राप्त कर लेते हैं। 60 वर्षीय पेमाराम ने भेड़पालन की मदद से अशिक्षा व गरीबी को पीछे छोड़ते हुए आर्थिक आत्मनिर्भरता की एक मिसाल कायम की है। वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया – लाड़नूं की स्थापना से ही वह इस केन्द्र के सम्पर्क में होने से पशु प्रबंधन, टीकाकरण, अजोला आदि के बारे में प्रशिक्षण व सलाह लेकर उन्होंनें अपने व्यवसाय को बेहतर बनाया है। वे पशुओं का टीकाकरण समय पर करवाते है और डी–वर्मिंग समय–समय पर करते हैं।एक प्रगतिशील सजग पशुपालक के रूप में अन्य सभी पशुपालकों के लिए प्रेरणा के स्त्रोत हैं। **(सम्पर्क–पेमाराम, मो.नं. 7665025627)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

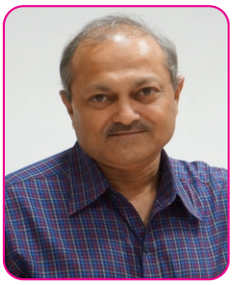

संक्रामक रोगों से पशुओं के बचाव के सभी विकल्पों को अपनाएं

बरसात के मौसम में मक्खी, मच्छर और सूक्ष्म जीवाणु तेजी से पनप कर स्वस्थ मनुष्य और पशुओं में संक्रामक रोगों के कारक बनते हैं। गली–मोहल्ले में जमा बरसाती पानी, खुली नालियां, पशुघर में कीचड़ व सीलन रोगाणुओं के पनपने और फैलने के प्रमुख कारण हैं। मौसमी बीमारियों के बारे में रोग पूर्वानुमान वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा हर एक माह के लिए जारी किया जाता है। आप इसके अनुसार संभावित रोग निरोधक टीके लगवा कर अपने पशु को इनसे बचा सकते हैं। हमारे अधिकांश पशुपालक गांव–ढाणी और सुदूर क्षेत्रों में निवास करते हैं। उनके लिए भी वेटरनरी विश्वविद्यालय ने टोल–फ्री हैल्प लाइन और एस.एम.एस. सेवा सुलभ करवाई है। टोल फ्री हैल्प लाइन का उपयोग करके चौबीसों घंटे पशु चिकित्सा विशेषज्ञ से परामर्श प्राप्त कर सकते हैं। एस.एम.एस. सेवा से जुड़कर पशुचिकित्सा उपचार और वैज्ञानिक पशुपालन के बारे में अद्यतन जानकारी घर बैठे ही प्राप्त की जा सकती है। दूरदराज के कई इलाकों में आधुनिक पशु चिकित्सा सुलभ नहीं होने पर पशुपालक अपने पारंपरिक ज्ञान का उपयोग कर जड़ी–बूटियों, आसान उपचार प्रक्रिया व पशुओं के प्रबंधन प्रणाली को अपनाते हैं। पशुओं में होने वाली बीमारियों की रोकथाम और उनका उपचार ऐसी पद्धतियों से किया जा सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार विकासशील देशों में रहने वाले 80 प्रतिशत से अधिक लोग अपने पशुओं के उपचार के लिए देशी उपचार पद्धति पर निर्भर रहते हैं। पारंपरिक दवाइयां रसायन मुक्त, सस्ती सुलभ व प्रभावशाली हैं, साथ ही पशुपालक इन्हें अपने स्तर पर बना भी सकता है। वेटरनरी विश्वविद्यालय में पारंपरिक पशुचिकित्सा पद्धति एवं वैकल्पिक चिकित्सा केन्द्र की स्थापना की गई है जहां इस दिशा में कार्य हो रहा है। आप द्वारा अपनाई जा रही नई वैकल्पिक पद्धति के बारे में आप भी इस केन्द्र को सूचना भिजवा सकते हैं। **–प्रो. ए. पी. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **सितम्बर, 2017** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**प्रो. जे.एस. मेहता** 9414278372 निदेशक क्लीनिक्स, राजुवास, बीकानेर	पशुओं में ब्यात के समय रखी जाने वाली सावधानी	**07.09.2017**
2	**प्रो. त्रिभुवन शर्मा** 9414264997 अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	पशुपालन के क्षेत्र में वेटरनरी विश्वविद्यालय का योगदान	**14.09.2017**
3	**प्रो. अवधेश प्रताप सिंह** 9414139188 निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर	खनिज पदार्थों की कमी से पशुओं में होने वाली बीमारियां एवं उनकी रोकथाम	**21.09.2017**
4	**डॉ. टी.के. गहलोत** 9414137029 सेवानिवृत्त प्रोफेसर, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	ऊंटों में पाये जाने वाले शल्य रोग व उनका उपचार	**28.09.2017**

मुस्कान !

संपादक
प्रो. ए. पी. सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. ए. पी. सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. ए. पी. सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224